व्यापारी का पतन और उदय पंचतंत्र कहानी

शहर में एक बहुत ही प्रचलित कुशल व्यापारी रहता था। लोग उसकी बेहद प्रशंसा करते थे क्योंकि वह बहुत ही कुशल था और व्यापार को चलाना बखूबी जानता था। उसकी प्रशंसा राजा के कानों में पहुंची। राजा ने उसकी प्रशंसा और उसकी कुशलता के बारे में सुनकर उसे राज्य के व्यापार को संभालने को जिम्मेदारी दी। वह राज्य के व्यापार को संभालने लगा।

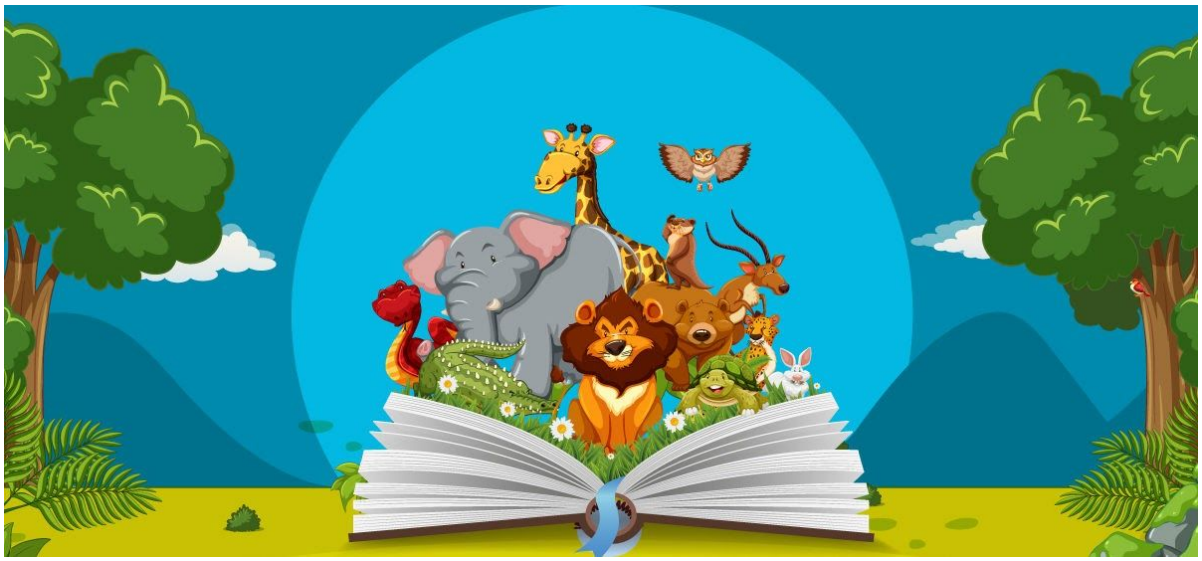

उस व्यापारी की एक बेटी भी थी जो बहुत बड़ी हो चुकी थी। अब उसकी शादी का समय आ चुका था। व्यापारी ने अपनी बेटी की शादी के लिए बहुत ही बेहतरीन आयोजन किया था। शादी में उसने राजा, राजघराने के लोगों और शहर के अन्य लोगों को भी आमंत्रित किया।

शादी के दिन उसके घर सब पधारें। उसी समय एक राज घराने का नौकर गलती से राजघराने की कुर्सी पर बैठ गया। यह देखकर वह व्यापारी बहुत ही ज्यादा गुस्सा हो गया। गुस्से में आकर उसने उस नौकर को आयोजन से बाहर निकाल दिया। इन सब से उस नौकर को बहुत ही ज्यादा बुरा लगा। वह खुद को अपमानित महसूस कर रहा था। ऐसे में उसने व्यापारी से बदला लेने का सोचा।

कुछ दिनों बाद वह सुबह-सुबह राजा के कमरे की सफाई कर रहा था। उस समय नौकर ने देखा कि राजा की नींद कच्ची थी। राजा हल्की नींद में थे। उसने इस बात का फायदा उठाया और हल्की सी आवाज में बोला, “उस व्यापारी की इतनी हिम्मत जो वह रानी को इस तरह से अपमानित करें।”

यह सुनकर राजा तुरंत उठ गए और उन्होंने नौकर से पूछा, “तुमने क्या कहा था फिर से कहना जरा? क्या उस व्यापारी ने रानी को अपमानित किया?”

राजा के सवाल पूछते ही वह नौकरी उनके पैरों में गिर गया और उनसे माफी मांगने लगा। वह राजा से बोला, “मुझे माफ कर दीजिए महाराज। मैं रात को ठीक से नहीं सोया इसीलिए कुछ भी बड़बड़ा रहा हूं। आप मेरी बात पर ध्यान मत दीजिए।” यह कहकर वह नौकर वहां से चला गया। लेकिन राजा के मन में एक शंका घर कर गई।

यह सब सुनकर राजा ने उस व्यापारी को महल में आने से मना कर दिया और उसके अधिकारों को भी कम कर दिया। अगले ही दिन वह व्यापारी जब महल के अंदर आने के लिए दरवाजे पर पहुंचा तो पहरेदार ओ ने उसे रोक दिया और उससे बोला, “आप अंदर नहीं जा सकते। आपको अंदर जाना मना है।”

उसी समय पास में वह नौकर खड़ा था जो यह सब देखकर जोर-जोर से हंस रहा था और वह बोला, “अरे अरे तुम नहीं जानते क्या यह कौन है? यह बहुत ही पहुंचे हुए आदमी है। यह चाहे तो किसी को भी कहीं से भी निकाल सकते हैं।” यह कहकर वह नौकर वहां से चला गया।

उस नौकर की बात को सुनकर व्यापारी समझ चुका था कि यह सब उस नौकर का किया हुआ है। व्यापारी समझ चुका था कि नौकर ने उससे बदला लिया है। ऐसे में व्यापारी ने फिर से उस नौकर को आमंत्रित किया। व्यापारी ने नौकर की अच्छे से सेवा की और उससे माफी मांगा। यह सब देखकर वह नौकर खुश हो गया और पुरानी बातों को भूल गया।

खुश होकर नौकर ने उस व्यापारी से कहा, “आप चिंता मत करो मैं आपके पुराने पद को वापस दिल्वौंगा।” यह कहकर नौकर खुशी-खुशी वहां से चला गया।

अगले दिन वह नौकर फिर से राजा के कमरे की सफाई कर रहा था। तब उसने देखा कि राजा की नींद कच्ची है उसने बोला, “हे भगवान हमारे राजा के कितने भूखे रहते है। वह घूसलखाने में भी खाना खाते हैं।”

उस नौकर की यह बात सुनकर राजा तुरंत खड़े हो गए और उससे बोले, “तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे बारे में यह सब बोलने की।”

ऐसे में वह नौकर फिर से राजा के पैरों में गिर गया और उनसे बोला, “मुझे माफ कर दीजिए मैं कल रात को ठीक से नहीं सोया इसीलिए कुछ भी बड़बड़ा रहा हूं।” यह कहकर नौकर फिर से वहां से चला गया।

इसके बाद राजा को समझ में आया कि अगर वह नौकर राजा के बारे में उल्टी सीधी बात कह सकता है तो उसने व्यापारी के बारे में भी झूठ ही बोला होगा। ऐसे में राजा ने व्यापारी का पद उसे वापस दे दिया।

Panchatantra Stories in Hindi With Moral पंचतंत्र कहानी

मोरल ऑफ़ द स्टोरी

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें किसी का भी अपमान नहीं करना चाहिए। नहीं तो अपमानित हुआ व्यक्ति हम से बदला लेकर हमारा नुकसान कर सकता है। अगर हमने अनजाने में ही किसी का अपमान कर दिया हो तो समय रहते हैं उससे माफी मांग लेनी चाहिए।